eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के सामाजिक चिन्तन की शिक्षा में प्रासंगिकता

[1]डॉ0 यशपाल सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, दाउदयाल महिला पी0 जी0 कालेज, फिरोजाबाद

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीर की विचारधारा समाज के लिए एक दर्पण है, कबीर ने जातिवाद, ऊंच–नीच, धार्मिक कट्टरता और अन्धविश्वास के विरूद्ध शंखनाद किया। उन्होने हिन्दू, मुस्लिम के नाम पर चल रहे भेदभाव तथा उनके बीच दूरी को कम करने में सेतु का कार्य किया। कबीर एक महान क्रान्तिकारी संत थे। उन्होने निडर भाव से समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया। उन्होने धर्म के नाम पर हिंसा तथा पशुबलि का विरोध किया। कबीर ने पुस्तकीय ज्ञान के खण्डन के साथ सदाचार पर बल दिया और परिश्रम को सफलता की कुंजी बताया। कबीर बहुआयामी प्रतिभासम्पन समाज सुधारक संत थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रगतिशील शास्वत मूल्यों का तो पुरजोर समर्थन किया साथ ही प्रगति में बाधक रूढियों एंव अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए मानवीयता के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। अतः उनका समाजिक चिन्तन शिक्षा में आज भी प्रासंगिक हैं।

बीज–शब्द– कबीर, सामाजिक चिंतन, विरोध, शिक्षा, प्रासंगिकता

Introduction

भारत देश संसार का सबसे बडा प्रजातांत्रिक देश है, जो 145 करोड से अधिक संतानों को अपनी गोद में लिए, मस्तक पर धवल किरीट धारण किए एंव सागर में पॉव पसारे और हिमालय की रमणीय कोमल गोद में लेटा हुआ है। हमारा भारत प्रारम्भ से ही ऋषि–मुनियों संत महात्माओं, मनीषियों और विचारको की जन्म तथा कर्म भूमि रहा है, यह भारत का सौभाग्य ही है कि इन महापुरूषों से ज्ञान एवं सानिध्य लगातार प्राप्त होता रहा है। ऐसे ही एक महान संत कवि समाज सुधारक महात्मा कबीर का जन्म ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार विक्रय संवत् 1455 माना जाता है इनके जन्म के सम्बध में एक दोहा काफी प्रचलित है।

चौदह सौ पचपन साल गये, चन्द्रवाट एक ठाठ ठये।
ज्येष्ठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी तिथि प्रगट भये।।
धन गरजे दामिनि दमके, बूँदें बरसे झर लग गये।
लहर तालाब में कमल खिले, तह कबीर भानु प्रगट भये।।

कबीर की जन्म तिथि की भॉति मृत्यु तिथि भी अनिश्चित है। मृत्यु के सम्बध में भी एक दोहा प्रचलित है। जो निम्नलिखित है।

संवत पन्द्रह सौ पचहत्तर कियो मगहर को गोन।
माघ सुदी एकादशी रलो पौन में यॉन।।

इस दोहे से स्पष्ट है कि उनकी मृत्यु संवत 1575 में हुई इनकी आयु लगभग 120 वर्ष मानी गई। कबीर शब्द का अर्थ 'महान' होता है वास्तव में कबीर ने अपने कार्यों से अपने नाम को सार्थक किया। कबीर जिस समय पैदा हुए उस समय पूरी सामाजिक व्यवस्था अन्धविश्वासो, कुरीतियों, तथा ढोंगों के कारण दिशाहीन हो गयी थी। कबीर स्वच्छंद विचारक थे। वे मानवतावादी आस्था के साथ समाज मे सुधार लाना चाहते थे। इसीलिए उन्होने समाज में व्याप्त जाति, धर्म, Åँच–नीच, अमीरी–गरीबी आदि समाज की प्रगति को रोकने वाली रूढियों का विरोध किया। सही मायने मे अध्यात्म और मानविकी की समन्वित क्रान्ति कर कबीर ने मानव समाज को दिव्य संदेश दिया एवं क्रान्ति का विगुल फूॅका। प्रेरित किया। मानवता के संरक्षण और विश्लेषण के लिए पुकारा। समाज को झकजोर कर जगाया स्वावलंबी बनने का अàान किया। सर्वधर्म को संगठित किया। आप सच्चे ज्ञानानुभवी थे। लौकिक और अलौकिक ज्ञान के ज्ञाता थे ज्ञान के खजाने एवं भण्डार थे।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा **''कबीर की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पडने से अंकुरित हुई थी''**

अध्ययन के उद्देश्य–

1. कबीर के दोहों में सामाजिक चिंतन का अध्ययन करना।
2. कबीर के सामाजिक चिंतन की शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन करना

साहित्यावलोकन–

प्रकाश, ओम (2023) ने अपने शोधपत्र आधुनिक समय में कबीर के सामाजिक चिंतन की प्रासंगिकता के निष्कर्ष में बताया कि कबीर की अखण्डता, फक्कडता, निर्भीकता स्पष्टवादिता, क्रांतिकारिता और अहंभाव आदि सभी उनके काव्य में झलकती है जो युगों–युगों तक प्रेरणा देती रहेंगी। कबीर के प्रभवशाली अद्वितीय व्यक्तित्व ने स्वभाविक रूप में उनके काव्य में भी युगान्तकारी प्रभाव शक्ति का सृजन किया जो आज के दौर में भी अति प्रासंगिक है।

गिरि, रघुनाथ (2020) ने अपने शोध कबीर दर्शन में मानव का स्वरूप तथा उसका लक्ष्य के निष्कर्ष में बताया कि कबीर हठयोग के प्रति अधिक आकर्षित थे।

कबीर का सामाजिक चिंतन–

संत कबीर ने तत्कालीन समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए काव्य को समाजिक पिषमताओं के परिहार के लिए हथियार बनाया वह न तो काव्य में मर्मज्ञ थे और न अलंकारों के आचार्य। अपने बारे में उन्होने आम आदमी की भॉति सहज भाव से कहा है–

मसि कागज छुओ नही, कलम गही ना हाथ।

चारौ युग को महतम कबिरा गाई बात ।।

जात–पात का विरोध–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर ने जाति–पाति का विरोध किया है वे समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था तथा जाति के भेद–भाव में सुधार करना चाहते थे।

जाति न पूँछों साधु की पूँछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का पडा रहने दो म्यान।।

वे मनुष्य को उसकी जाति कुल एवं धन आदि से ऊँचा नहीं बल्कि उसके कर्म से महान मानते थे।

हिंसा का विरोध–

कबीर दास हिंसा का विरोध प्रत्येक स्तर पर करना चाहते थे वह फिर जीभ में स्वाद के लिये की गई हो या फिर धर्म के नाम पर, मुसलमान दिन में रोजा रखते हैं और रात में गाय की कुर्बानी देते हैं। ये दोनों कार्य परस्पर विरोधी हैं। इससे भला खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है?

दिन में रोजा रहत हैं, रति हनत हैं गाय।

यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुशी खुदाय।।

मूर्ति पूजा का खण्डन–

कबीर ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है

कबीर पाहन पूजें हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।

घर की चाकी क्यों नहीं पूजे पीसि खाये संसार।।

कबीर कहते है। कि पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते हैं तो मैं पहाड की पूजा कर लेता । उसकी जगह कोई घर की चक्की को नहीं पूजता जिससे अनाज पीसकर सभी लोग अपना पेट भरते हैं।

धार्मिक पाखण्ड का विरोध–

कबीर ने धार्मिक पाखण्ड का घोर विरोध किया।

कस्तूरी कुडली बसै, मृग ढूँढें वन माहिं।

ऐसे घटि–घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं।।

कबीर कहते है कि हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल में ढूँढता फिरता है। जबकि कस्तूरी की सुगंध उसकी अपनी नाभि में व्याप्त है, परन्तु वह जान नहीं पाता। उसी प्रकार मनुष्य भगवान को मन्दिर–मस्जिद तीर्थ आदि स्थानों पर ढूँढता फिरता है जबकि भगवान को पाने के लिये कहीं जाने की जरूरत नहीं वह तो घट–घट का वासी है उसे पाने के लिए हमारी आत्मा शुद्ध होनी चाहिए।

पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन–

कबीर पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन करते थे। और कहते थे–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता अखिन की देखी।

मैं कहता सूरझा बनहारी, तू राख्यो अरूझाई रे।।

वे शास्त्र के पंडित को चुनौती देते हुए कहते हैं कथनी और करनी में एक रूपता होनी चाहिए। वे सदाचार पर बल देते हैं शास्त्र पर नहीं।

लोक मंगल की भावना–

कबीर समाज सुधार लाने के लिए लोक मंगल की कामना करते हैं।

कबीरा खडा बाजार में मॉगे सब की खैर।

ना काहू से दोस्ती, ना काहू सौं बैर।।

इस संसार में आकर कबीर अपने जीवन में बस यही चाहते हैं कि भला हो संसार में यदि किसी से दोस्ती नहीं तो दुश्मनी भी न हो। कबीर मनुष्यों को एक ही शक्ति से उत्पन्न हुआ मानते हैं उन्होने मनुष्य को संकीर्ण विचारधारा से लगातार उच्च तथा आदर्श जीवन जीने का उपदेश दिया।

परिश्रम की महत्ता–

कबीर परिश्रम करने वालों को महान मानते थे–

कबीर उद्यम अवगुण को नहीं, जो करि जाने कोय।

उद्यम में आनन्द है, सॉई सेती होई।।

कबीर कहते है। कि परिश्रम में सफलता का अनन्द छिपा है। जो मनुष्य परिश्रम करता है उसका ईश्वर भी साथ देता है।

विनम्रता की भावना–

कबीर पूरे संसार को विनम्रता का संदेश देना चाहते हैं–

शीलवन्त सबसे बडा, सर्व रतन की खानि।

तीन लोक की संपदा, रही सील मे आनि।।

कबीर कहते है कि विनम्रता जीवन का सबसे बडा गुण है। यह सब गुणों की खान है। सारे जहॉ की दौलत होने पर भी सम्मान मिलेगा जरूर नहीं परन्तु विनम्रता होने पर सम्मान अवश्य मिलता है।

स्वास्थ्य पर बल–

कबीर यह तन जात है, सको तो राख बहोर।

खाली हाथों वह गये, जिनके लाख करोर।।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर मनुष्य को जगाते हुए कहते हैं कि हो सके तो अपना कीमती समय स्वास्थ्य ध्यान में लगायें क्योंकि जिसके पास करोडों की सम्पत्ति है उन्हें भी खाली हाथ दुनिया छोडनी पड़ रही है।

सामाजिक चिंतन की षिक्षा में प्रासंगिकता–

वर्तमान शिक्षा में भारतीय आदर्शो का स्थान रिक्त जान पडता है। क्योंकि इस शिक्षा में केबल बौद्धिक विकास की ओर ही ध्यान दिया जाता है। रात दिन पुस्तकें रटकर परीक्षा में पास हो जाने को आज का विद्यार्थी अपनी अदभुत सफलता समझता है। ऐसी शिक्षा में कबीर के सामाजिक चिंतन की प्रांगगिकता का अध्ययन निःसंदेह प्रतीत होता है।

- शिक्षा संस्थाओं में जाति आधारित भेदभाव और हिंसा के बढते मामले और कानून की उपरोक्त हमलों को रोक पाने में नाकामयाबी से स्पष्ट होता है कि कबीर ने जो समाज को जाति–पाति, वर्ण व्यवस्था, और भेदभाव के विरोध में सेदेश दिया था वह वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिक प्रतीत होता है।
- कबीर ने कहा कि हिंसा किसी भी प्रकार की हो वह हमेशा दुःख ही पहुॅचाती है हिंसा से कभी कोइ प्रसन्न नहीं हो सकता वर्तमान में रूस, यूक्रेन या इजराइल हामस युद्ध से शिक्षा पर जो प्रभाव पड रहा है वह किसी भी मानव âदय को झकझोरने के लिए पर्याप्त है। यूक्रेन के बच्चों ने इस युद्ध में बहुत बडी कीमत चुकाई है। शिक्षा पर हमले भविष्य पर हमले हैं।
- कबीर जी ने मूर्तिपूजा का खण्डन करके एक प्रकार से जिस धर्म निरपेक्ष समाज की कल्पना की थी वह धर्म निरपेक्ष समाज बिना धर्म निरपेक्ष विचार धारा के सम्भव नही है। धर्मनिरपेक्ष शब्द भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 42 वें संशोधन 1976 डाला गया था। शिक्षा नीति 1986 में स्पष्ट कहा गया था ''सभी शैक्षणिक कार्यक्रम धर्म निरपेक्ष मूल्यों के अनुरूप सख्ती से चलाए जायेंगे''
- कबीर दास जी ने पुस्तकीय ज्ञान का खण्डन करके अनुभव पर आधारित ज्ञान पर बल दिया था वह आज भी प्रांसगिक है इसी लिए नई शिक्षा नीति 2020 में भी अनुभव के आधार पर सीखने एवं ऑन लाईन शिक्षा पर बल दिया है।
- हमारी वर्तमान शिक्षा जन कल्याण की भावना से ओत प्रोत है हमारी शिक्षा विद्यार्थियों के अन्दर सत्य, अहिंसा, प्रेम भाईचारा, सदाचार, साम्प्रदायिक सोहार्द मानवता, आदि गुणों का विकास करती है उपरोक्त आध्यात्मि एवं सामाजिक लोक मंगलकारी मूल्यों को अपने साहित्य एवं सामाजिक चिंतन में बल दिया है जो कि वर्तमान लोकतान्त्रिक सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश में प्रासंगिक है।
- कबीर दास जी ने अपनी आजीविका स्वंय अर्जित करने पर बल देते हुए वर्तमान आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला उसी समय रख दी थी जिस पर महात्मा गॉधी की शिल्प कला केन्द्रित बुनियादी शिक्षा में भी बल दिया गया और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी श्रमेव जयते का उद्घोष करते हुए आज भी प्रासंगिक है।
- कबीर दास जी सामाजिक सद्भाव बनाये रखने के लिए एवं अधिगम प्रकिया को सुचारू संचालन के लिए एंव विद्यार्थियों के गुणों में से एक विनम्रता को भी आवश्यक मानते थे उक्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी समाजिक सौहार्द एवं अनुभूति अधिगम के लिए अपरिहार्य है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

- कबीर दास जी धन से ज्यादा स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण मानते थे। कबीर जी के स्वास्थ्य सम्बंधी विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि तब थे। वर्तमान भारत में भी भारत सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से व्यापक सुधार लाने का प्रयास कर रही है। साथ ही संविधान के अनुच्छेद 39 (म), अनुच्छेद 41 अनुच्छेद 42, अनुच्छेद 47, स्वास्थ्य से सम्बधित है और हम सभी इस बात को भली भॉति जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है, कि कबीर अपने युग के प्रगतिशील महान समाज सुधारक एवं दार्शनिक थे उनके सामाजिक चिंतन की विचारधारा ने न केवल तत्कालीन समाज की कुरीतियों रूढियों एंव अन्धविश्वासों पर जोरदार प्रहार कर मानवता को प्रगति पथ पर अग्रसर किया बल्कि उनका समाजिक चिन्तन वर्तमान लोकतान्त्रिक भारतीय समाज एंव लोकतांत्रिक शिक्षा प्रणाली के प्रगति पथ को आलोकित कर मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

1. कुरूक्षेत्र, गुरूपीत सिंह (2021). *राजगीर से राजभवन.* बुक स्केलाइनिक पब्लिकेशन.
2. थॉमस, एम0 डी0 (2008). *कबीर और ईशाई चिंतन.* राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली.
3. दास, एस0, *कबीर ग्रन्थावली.* इण्डियन प्रेस, लि0 प्रयाग.
4. देवी, यू0 (2021). *कबीर की प्रासंगिता वर्तमान संदर्भ* अपनी माटी चित्तौड़गढ़ राजस्थान.
5. देवी, एल0 (2018). *कबीर की कविताओं में सामाजिक चेतना का अध्यन.* जर्नल ऑफ एडवांस एण्ड स्कोलरली रिसर्चस इन अलाइड एजूकेशन.
6- प्रकाश, ओ0 (2023). *आधुनिक समय में कबीर के सामाजिक दर्शन की प्रांसगिकता–* आनन्द दास. श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका वोल्यूम दस इश्यू पाँच http://www.socialresearchfoundation.com/shinkhlala.php#8
7. शुक्ल, आर0, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*
8. शर्मा, एस0 के0 (2022) हिन्दी काव्य एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशन
9. https://hi.m.wikipedia.org
10. https//ncert.nic.in